

Topic - Types of Mental Conflict

मानसिक संघर्ष को मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में विभाजित कर अध्ययन किया जा सकता है, ये निम्नांकित हैं:—

- (1) Approach - Approach Conflicts.
अभिगम - अभिगम संघर्ष ।
- (2.) Approach - Avoidance Conflicts.
अभिगम - परिहार संघर्ष ।
- (3.) Avoidance - Avoidance Conflicts.
परिहार - परिहार संघर्ष ।

(1.) Approach - Approach Conflicts :- यदि दो या दो से अधिक समान इच्छाएँ एक ही सामान्य उल्लास होती हैं और दोनों समान रूप से आकर्षित होती हैं जिसमें किसी एक की उपेक्षा करना कठिन होता है तब अभिगम - अभिगम (Approach - Approach) की स्थिति उत्पन्न होती है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति दोनों इच्छाओं की पूर्ति करना चाहता है लेकिन दोनों की एक सामान्य पूर्ति करना संभव नहीं होता है। परिणाम स्वरूप मानसिक संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जैसे - यदि कोई युवक किसी युवती को पसंद करता है और उसके लम्बे विचार करना चाहता है परन्तु उसके माता-पिता दूसरी लड़की के लिये काका चाहते हैं। युवक न तो माता-पिता को नाराज करना चाहता है और न पसंद वाली युवती को। ऐसी स्थिति में वह युवक मानसिक संघर्ष का शिकार हो सकता है।

(2.) Approach - Avoidance Conflicts : _____

यदि लक्ष्य के सामने किसी एक ही लक्ष्य के प्रति परस्पर विरोधी भाव उत्पन्न होना है जिससे लक्ष्य प्राप्त करना मुश्किल होना है वह अभिगम-पाटिर संघर्ष (Approach - Avoidance Conflict) की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। उदाहरण स्वरूप - एक लक्ष्य भा प्रपक मिर्च में भाग भी लेना चाहता है और उसे मिर्च में चीर लगाने का भाग भी है।

उस प्रपक का लक्ष्य एक ही है परन्तु उक्त प्रति उल्लिख संभव नहीं होगा कि चीर लगाने का भाग भी लाना है। लक्ष्य उत्पन्न होना कि जगत् जगत् उक्त प्रकार के मानसिक द्वन्द्व में पड़ता है। अभिगम-पाटिर संघर्ष कहलाता है। उक्त प्रकार एक ही लक्ष्य के प्रति प्राप्ति वला विरस्कार दो परस्पर विरोधी भाव उत्पन्न होने के कारण आकर्षण एवं विकर्षण दोनों भाव उत्पन्न हो जाता है।

(3) Avoidance - Avoidance Conflicts : _____

ऐसा भी पाया जाता है कि कभी-कभी लक्ष्य के सामने दो ऐसी दुश्कारें एक ही सामने उत्पन्न होती हैं, जिनमें एक किसी एक का भी पूर्ण अना नहीं चाहता, परन्तु उसे किसी एक को पूरा करने के सम्बन्ध में निपाय करना आवश्यक होता है। उदाहरण के तौर पर जैसे कोई छात्र परीक्षा में कमगोर होने से काह ले वह ~~किसी~~ एक विषय में प्रपक-3 पर

को पहना नहीं चाहता है; इस विषय के बदले उसे अंग्रेजी पहना होगा, लेकिन वह इस विषय में भी कमजोर है। इस प्रकार उलके लिए दोनों विषय विरुद्ध के योग्य हैं, किन्तु भी भगवती के कारण उलके किसी एक विषय का चुनाव करना है। इस तरह की दुर्विधापूर्वी स्थिति को ही Avoidance-Avoidance Conflict कहा जाता है।

उपर्युक्त सभी प्रकार के मानसिक संघर्षों का अनुभव व्यक्ति को कभी न कभी अवश्य ही करना पड़ता है। सामान्य व्यक्ति कुछ ही समय के भीतर इस संघर्ष का निराकरण गौरी प्रयास से ही कर लेता है, परन्तु जब इन संघर्षों का कोई समाधान नहीं निकलता है तब संघर्ष की स्थिति लम्बा बनी रहती है। इससे उत्पन्न तनाव, चिंता (Anxiety) में बदल जाने के कारण व्यक्ति में असामान्य लक्षण उत्पन्न करने लगता है। इस प्रकार असामान्यता को समझने के लिए मानसिक संघर्षों का पता लगाना आवश्यक ही जाता है ताकि उनका निराकरण किया जा सके।